

Approved by UGC
Journal No. : 63580
Regd. No. 21747

Indexed : IIJIF, I2OR & SJIF
I2OR Impact Factor : 6.650

ISSN 2277-2014

Research Discourse

An International Peer-reviewed Refereed Research Journal

Vol. XI

No. III

July-September, 2021



Editor in Chief

Dr. Anish Kumar Verma

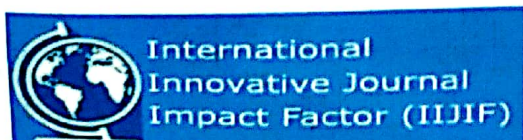
Associate Editors

Dr. Rakesh Kumar Maurya

Dr. Purusottam Lal Vijay

Romee Maurya

Shivendra Kumar Maurya



Approved by UGC
Journal No. : 63580
Regd. No. 21747

Indexed by : IJIF, I2OR, SJIF
I2OR Impact Factor : 6.650
ISSN 2277-2014

Research Discourse

An International Peer-reviewed Refereed Research Journal

Vol.-XI

No. III

July-September 2021



Editor in Chief
Anish Kumar Verma

Associate Editors
Rakesh Kumar Maurya
Purusottam Lal Vijay
Romee Maurya
Shivendra Kumar Maurya

Published by :
South Asia Research & Development Institute
B. 28/70, Manas Mandir, Durgakund, Varanasi-221005, U.P. (INDIA)
Website : www.researchdiscourse.org
E-mail : researchdiscourse2012@gmail.com
Mobile : 09453025847, 8840080928

मानसून की उत्पत्ति से सम्बन्धित प्रमुख अभिनव सिद्धान्त 60-63

डॉ० राधाकृष्ण दूबे

राष्ट्रीय सुरक्षा के समक्ष साइबर आतंकवाद व ड्रोन तकनीक से खतरे 64-66

डॉ० रणजीत सिंह

हिन्दी कथा-साहित्य में दलित वर्ग 67-68

डॉ० शशी पालीवाल

हिन्दी साहित्येतिहास ग्रन्थों में स्त्री-लेखन का स्थान 69-71

कपिल कुमार गौतम व प्रो० चंदा बैन

यज्ञीय कर्म : एक अध्ययन 72-73

डॉ० सरला शर्मा

गांधीवादी दर्शन : एक नवीन दृष्टिकोण 74-75

महावीर सिंह

बौद्ध शिक्षा पद्धति 76-79

प्रेम लता

हिन्दी साहित्येतिहास ग्रन्थों में स्त्री-लेखन का स्थान

कपिल कुमार गौतम* व प्रो० चंदा बैन**

*शोध अध्येता, हिंदी विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश

**विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग एवं भाषाविज्ञान विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश

सारांश : वर्तमान को भविष्य में भूतकाल की संज्ञा दी जाती है। वही भूतकाल आगे चलकर इतिहास में बदल जाता है। सामान्यतः इतिहास में युग विशेष की समस्तसामाजिक-राजनीतिक अवस्थाओं, व्यवस्थाओं और युग निर्माताओं की जानकारी संकलित की जाती है। युगों-युगों तक ऐतिहासिक पात्र एवं घटनाएँ विभिन्न माध्यमों से विचरण करते रहते हैं। इन माध्यमों में साहित्य सबसे महत्वपूर्ण माध्यम है। साहित्य अपने समय को इतिहास के रूप में संकलित करता है। किन्तु हिन्दी साहित्य के इतिहास में स्त्री लेखन के संदर्भ में उपेक्षित व्यवहार किया जाता रहा है। जिसके लिए साहित्येतिहास ग्रन्थों का अवलोकन अवश्य हो जाता है।

मुख्य शब्द : हिन्दी साहित्य, स्त्री-लेखन, स्त्री-विमर्श, साहित्येतिहास, इतिहास-दृष्टि आदि।

विभिन्न वैचारिक मत-मतांतर तथा दृष्टिकोण इतिहास के परिणाम, दिशाएँ और मानक इत्यादि निर्धारित एवं परिवर्तित करते हैं। किसी वैचारिकता में एक ऐतिहासिक पात्र नायक हो सकता है, तो उसके विपरीत दृष्टिकोण में वही पात्र खलनायक भी हो सकता है। अर्थात् इतिहास की अवस्थाओं, व्यवस्थाओं और युग-निर्माताओं के निर्धारण के संदर्भ में इतिहासकार का वैचारिक दृष्टिकोण बहुत महत्वपूर्ण होता है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में भी साहित्येतिहासकारों का वैचारिक दृष्टिकोण प्रभावी रहा है। जिसके कारण हिन्दी साहित्येतिहास में स्त्री लेखन को उचित स्थान नहीं दिया गया। इसलिए हिन्दी साहित्येतिहास में लेखिकाओं की उपेक्षा पर लगातार प्रश्नचिन्ह लगते रहे हैं। "हिन्दी साहित्य के इतिहास में स्त्री कहाँ है? अगर वह नहीं है तो क्यों नहीं है? अगर वह है तो किस रूप में है? इस रूप में है तो ऐसी क्यों है? वास्तविक तथ्यों और हिन्दी साहित्य के इतिहास में दर्ज तथ्यों में इतना फासला क्यों है? और फिर सवाल का एक लम्बा सिलसिला। सब सवालों के बाद और महत्वपूर्ण बात जो बची रह जाती है कि क्या स्त्री को उसका अतीत, उसकी परम्परा, उसकी स्मृति और उसकी पहचान वापस मिलना व्यर्थ की बात है या जरूरी है? और यह कैसे सम्भव है?" ऐसे ही अनेक प्रश्न हिन्दी साहित्येतिहास में स्त्री लेखन के स्थान और उसकी भूमिका को निरूपित करने का निमित्त बनते हैं।

वास्तविक अर्थों में हिंदी साहित्य का इतिहास लेखन उन्नीसवीं शताब्दी में ही आरंभ हुआ हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन का प्रथम प्रयास सन 1839 में गार्सा द तासी के द्वारा फ्रेंच भाषा में लिखित 'इस्त्वार द ला लितरेत्युर ऐन्दुई ऐन्दुस्तानी' के रूप किया गया। इसका हिंदी भाषा में अनुवाद लक्ष्मीसागर वार्धणेय ने किया था। हिन्दी अनुदित संस्करण में लक्ष्मीसागर वार्धणेयने गार्सा द तासी द्वारा उल्लेखित सभी हिन्दी-उर्दू मिश्रित 3224 कवियों में से

हिंदी के कुल संभावित 358 लेखकों को शामिल किया। जिसमें कर्माबाई, जानाबेगम, प्रेमाबाई, मीराबाई, मुक्ताबाई, रत्नावती और रूपमती का उल्लेख मिलता है। इस प्रकार गार्सा द तासी के द्वारा संकलित कुल 3224 कवियों में से केवल 6-7 ही हिंदी की लेखिकाएँ मिलती हैं। इनमें मुक्ताबाई का संबंध हिंदी एवं मराठी दोनों से है।

हिंदी साहित्येतिहास लेखन की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए सन 1883 में शिवसिंह सेंगर ने 'शिवसिंह सरोज' की रचना की। जिसमें उन्होंने करीब एक हजार हिंदी लेखकों के संक्षिप्त परिचय और रचनाओं को शामिल किया। "सरोज में यद्यपि कई कवयित्रियों की भी रचनाएँ संकलित हैं, पर सरोजकार को सबके स्त्री होने का पता न था। महाकवि केशव की शिष्या परम प्रवीणराय, भक्त-श्रेष्ठ गीतकारों में मूर्धन्य स्थान की अधिकारिणी मीराबाई और राजा शिवप्रसाद की पितामही रत्नकुंवरि बीबी का उल्लेख सरोज में कवयित्रियों के रूप में हुआ है। इनके अतिरिक्त ताज, चन्दसखी, रसिक बिहारी, सेख, और सुजान का नामोल्लेख है, पर इनमें से किसी के भी सम्बन्ध में यह कथन नहीं है कि यह स्त्री थी। चन्दसखी मीरा के ही समान राजस्थान की एक प्रसिद्ध गीतकार हैं। इनके पदों का एक अच्छा संकलन बनारस की पद्मावती शबनम जी ने किया है। ताज, सेख और सुजान मुसलमान कवयित्रियाँ हैं। ताज तो प्रसिद्ध मुगल बादशाह अकबर की बेगम थी। सेख, प्रसिद्ध स्वच्छंदतावादी प्रेमी कवि आलम की प्रिया-पत्नी थी। सुजान, घनानन्द की प्रिया मुहम्मद शाह रंगीले के दरबार की गायिका थी। रसिक बिहारी का असल नाम बनीठनी जी था। यह महाराज नागरीदास की उप-पत्नी थी। यह सब की सब सरल काव्य करने वाली हुई हैं।" शिवसिंह सेंगर ने कुल आठ कवयित्रियों का उल्लेख किया है, हालाँकि उनकी दृष्टि में तो उनमें से पाँच पुरुष ही थे। विभिन्न स्तरों पर ऐसी ही त्रुटियों के कारण 'शिवसिंह सरोज' को बहुत प्रामाणिक और विश्वसनीय नहीं माना जाता है।

जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन द्वारा रचित 'द मॉडर्न वर्नेक्युलर लिटरेचर ऑफ हिंदुस्तान' को कालक्रम की दृष्टि से हिंदी साहित्य का प्रथम व्यवस्थित इतिहास माना जाता है। इसका प्रकाशन 1888 ई. में हुआ। इसमें लेखकों का विवरण पूर्ववर्ती ग्रन्थों से ही लिया गया है, इसलिए इसमें भी लेखिकाओं की अनदेखी की गयी। मीराबाई, परवीन राइ पातुरी, रतन कुँअरि तथा रसिक बिहारी केवल चार लेखिकाओं का विवरण दिया गया है तथा शिवसिंह सेंगर की भाँति ताज और सेख(शेख) को पुरुष कवि के रूप में उल्लेखित किया गया है।

मिश्र बंधुओं के द्वारा सन 1913 में 'मिश्रबंधु-विनोद' के तीन भाग और 1934 में इसका चौथा भाग प्रकाशित कराया गया। इसमें

हिंदी भाषा के प्रसिद्ध और अप्रसिद्ध करीब पाँच हजार साहित्यकारों को सहेजने का प्रयास किया गया है। 'मिश्रबंधु-विनोद' के प्रथम भाग में प्रारम्भिक और माध्यमिक काल के लेखकों का संकलन किया गया है। जिसमें करीब 10 कवयित्रियों का उल्लेख मिलता है। 'मिश्रबंधु-विनोद' का दूसरा भाग हिन्दी साहित्येतिहास के अलं. त काल (शीतिकाल) पर केन्द्रित है। जिसमें 14 कवयित्रियों को शामिल किया गया है। इसके तीसरे भाग में अज्ञात काल के विलुप्त सहित परिवर्तन काल (आधुनिक काल) के लेखकों को समाहित किया गया है। जिनमें 8 कवयित्रियों का वर्णन मिलता है। इस प्रकार 1913 तक मिश्रबंधुओं ने करीब 32 कवयित्रियों का उल्लेख अपने 'मिश्रबंधु-विनोद' के अंतर्गत कर दिया था। 'मिश्रबंधु-विनोद' का अंतिम भाग 1934 में प्रकाशित हुआ। जिसमें उन्होंने पूर्व के भागों में छूटे हुए कवियों के अलावा आधुनिक एवं अपने समकालीन लेखकों को शामिल किया। जिसमें साठ से अधिक लेखिकाओं का समावेश किया गया है। इस प्रकार मिश्र बंधुओं ने 'मिश्रबंधु-विनोद' के चार खंडों के अंतर्गत 100 से अधिक कवयित्रियों का उल्लेख किया है।

हिंदी साहित्य का प्रथम प्रामाणिक और सुव्यवस्थित इतिहास लिखने का श्रेय आचार्य रामचन्द्र शुक्ल को दिया जाता है। इनके 1929 में प्रकाशित हिन्दी साहित्य का इतिहास को हिन्दी साहित्येतिहास की कसौटी भी माना जाता है। इन्होंने अपने साहित्येतिहास में अंदाज, पदमावती, सुरसुरी, मीराबाई, शेख रंगरेजिन, बंग महिला, सुमद्राकुमारी चौहान और महादेवी वर्मा के साथ-साथ सिद्धों-नाथों में चार योगिनी क्रमशः मणिभद्रपा, कनखलपा, लक्ष्मीकरा और चिंता सहज योगिनी का नामोल्लेख किया है। आचार्य शुक्ल से पूर्व ही पचास से अधिक लेखिकाओं की सक्रिय उपस्थिति का वर्णन मिश्रबंधु और मुंशी देवीप्रसाद के द्वारा किया जा चुका था। किन्तु आचार्य शुक्ल महिला लेखन के प्रति उदासीन दिखाई देते हैं। जिसके कारण हिन्दी लेखिकाओं के द्वारा आचार्य शुक्ल पर सवाल खड़े किए जाते हैं। इसी क्रम में अनुराधा का कथन उल्लेखनीय है—'हिन्दी साहित्य का पहला व्यवस्थित इतिहास लिखने वाले आचार्य शुक्ल की सबसे बड़ी कामयाबी इस बात में रही कि उन्होंने हिन्दी जनमानस में इस बात को पूरे विश्वास के साथ बैठा दिया कि यहाँ की स्त्रियाँ मानसिक विकास में सामान्य से निचले स्तर की रही हैं।' यह वास्तव में आश्चर्य का विषय है, कि आचार्य शुक्ल ने अपने साहित्येतिहास ग्रंथ में कवियों के अधिकतर विवरण जिस 'मिश्र-बंधु विनोद' से ही लिये हैं, उसी में 100 से अधिक कवयित्रियों का उल्लेख मिलता है, किन्तु फिर भी आचार्य शुक्ल स्त्री-लेखन को उचित स्थान देने का साहस नहीं दिखा पाए।

हिन्दी साहित्येतिहासकारों में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का नाम नवीन वैचारिक उद्भावनाओं के लिए उल्लेखनीय है। उन्होंने 'हिन्दी साहित्य : उद्भव और विकास' पुस्तक में करीब सात सौ लेखकों का उल्लेख किया है। जिनमें छः सिद्ध-नाथ योगिनी यथा—नाथन, पाहिल, भीलो, मणिभद्र, मेखलपा, कनखलपा, सहित कुल 20 लेखिकाओं को शामिल किया गया है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का साहित्येतिहास वैचारिक स्तर पर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल से पृथक् हो सकता है लेकिन स्त्री-लेखन को साहित्येतिहास में स्थान न देने के संदर्भ में दोनों की दृष्टि एक जैसी ही प्रतीत होती है।

सन 2003 में प्रकाशित सुमन राजे कृत 'हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास', हिन्दी साहित्येतिहास में स्त्री-लेखन का पहला आधिकारिक रूप से घोषित इतिहास है। सुमन राजे ने वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक की कवयित्रियों को चार नवजागरण युगों में विभाजित किया है, प्रथम भारतीय नवजागरण : थेरी गाथाएँ, द्वितीय नवजागरण : संस्कृत और प्राकृत कवयित्रियाँ, तृतीय नवजागरण : भक्ति-आन्दोलन, चौथा नवजागरण : आधुनिक कालीन। 'हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास' शुक्ल जी से लेकर अब तक लिखे हिन्दी के सारे साहित्येतिहासों का प्रतिपक्ष है। यह इतिहास बिना किसी घोषणा के अब तक के सारे इतिहास को 'आधा' और पुरुष रचनाशीलता का इतिहास साबित करता है।* 'हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास' को 'स्त्री-विमर्श' की पुस्तक मानने से इंकार करते हुए सुमन राजे लिखती हैं— 'आधा इतिहास' 'स्त्री-विमर्श' की पुस्तक नहीं है। यह साहित्येतिहास ही है परन्तु आधा।* इसके अंतर्गत सुमन राजे ने कवयित्रियों के परिचय से ज्यादा हिन्दी साहित्येतिहास में उनके स्थान को सुनिश्चित करने पर बल दिया है। हिन्दी साहित्येतिहास लेखन में हुई कवयित्रियों की उपेक्षा के सम्बन्ध में 'सुमन राजे' लिखती हैं— 'कुछ रचनाकार 'धर्म' के नाम पर काट दिये गये, कुछ 'सम्प्रदाय' के नाम पर, कुछ 'प्रामाणिकता' के नाम पर और कुछ 'कलात्मक' कसौटी पर पूरा न उतरने के कारण। इसका सबसे अधिक खामयाजा महिला लेखन को उठाना पड़ा।* इसी खामियाजे की पूर्ति का प्रयास इस साहित्येतिहास ग्रंथ में किया गया है।

वास्तव में 'हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास' केवल हिन्दी साहित्येतिहास ही नहीं, बल्कि समस्त भारतीय साहित्य में पुरुष इतिहासकारों का प्रतिपक्ष है। इस रूप में इसको अखिल भारतीय स्त्री-लेखन का संक्षिप्त इतिहास भी कहा जा सकता है। 319 पृष्ठों के इस इतिहास में 415 कवयित्रियों के नाम लिए गए हैं, जिनमें से हिन्दी की मात्र 194 हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि आधुनिक काल, जो मात्र 94 पृष्ठों का है, की लेखिकाएँ ही हिन्दी साहित्य का अंग मानी जा सकती हैं। बाकी 225 पृष्ठों में मीरा, ताज, चाँदसखी और जेबुनिशा आदि 10-12 भक्तिकालीन स्त्री कवियों के अलावा शेष लेखिकाएँ हिन्दी साहित्य की नहीं बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं— जैसे संस्कृत, पालि, प्राकृत, कन्नड़, तमिल, तेलगू, कश्मीरी, मलयालम, उड़िया और असमिया की हैं।* इस प्रकार सुमन राजे केवल हिन्दी ही नहीं वरन समस्त भारतीय साहित्येतिहास में लेखिकाओं की भूमिका को रेखांकित करने की कोशिश करती हैं।

'हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास' में उल्लेखित लेखिकाओं ने लगभग सभी विधाओं में लेखन कार्य किया है। एक साथ इतनी बड़ी संख्या में हिन्दी और हिन्दी से इतर भाषाओं से सम्बद्ध भारतीय लेखिकाओं का उल्लेख 'हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास' के अतिरिक्त अन्यत्र दुर्लभ है। 'हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास' यह सिद्ध करता है कि स्त्रियों के पास अपनी भाषा, अपनी जुबान और अपना साहित्य था, जिसमें उन्होंने अपनी पीड़ा को तो रखा ही है, संघर्ष करने के अपने हौसले को भी सामने रखा है।* यह हिन्दी साहित्य के इतिहास का एक नया युग आरंभ करता है। इसके साथ

ही भारतीय साहित्येतिहास में लेखिकाओं के संदर्भ में नूतन अनुसंधान के मार्ग प्रशस्त होते हैं।

सन 2014 में नीरजा माधव कृत 'हिन्दी साहित्य का ओझल नारी इतिहास' का प्रकाशन हुआ। जिसमें उन्होंने 1857 से 1947 तक की करीब 80 महिला साहित्यकारों को शामिल किया। इसमें अधिकतर जानकारी सुमन राजे के 'हिंदी साहित्य का आधा इतिहास' से ही ली गयी है। साहित्येतिहास के संदर्भ में भी सुमन राजे से मिलता-जुलता चिंतन ही दिखाई देता है। हालाँकि कुछ नई कवयित्रियों के नाम भी देखने को मिलते हैं। कवियों के द्वारा अपनी प्रतिभा को मंच तक पहुंचाने ने उद्देश्य से भारतेन्दु युग में विभिन्न साहित्यिक मण्डलों की स्थापना की गई। विभिन्न पुरुष कवियों के बीच अनेक नाम कवयित्रियों के भी विद्यमान थे किन्तु किसी भी साहित्यिक मण्डल में स्त्री-लेखिकाओं को स्थान नहीं दिया गया। इसी क्रम में भारतेन्दु युग की लेखिकाओं को लेकर नीरजा माधव ने स्त्री साहित्यकारों के मण्डल (संगठन) की रूपरेखा तैयार करते हुए लिखा- "सन 1857 से सन 1900 के बीच सृजन कर रही लेखिकाओं को मल्लिका मंडल और सन 1900 से 1947 तक के बीच लेखन कार्य कर रही लेखिकाओं को महादेवी मंडल के अंतर्गत रखना कोई सुनियोजित प्रतिक्रियावादी इतिहास लेखन न होकर मात्र अध्ययन की सुविधा के लिए है। मल्लिका मंडल के अंतर्गत प्रताप कुंवरिबाई, हरदेवी, रूप कुमारी चंदेल, महारानी वृषभानु कुंवर, राजरानी देवी, कमलाबाई किबे, गुजरातीबाई बुन्देलबाला स्पष्ट रूप से आ जाती हैं। महादेवी मंडल में बंग महिला और शिवरानी देवी से लेकर अनेक लेखिकाएं सम्मिलित हैं।" नीरजा माधव के द्वारा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की प्रेयसी मल्लिका को साहित्यिक मण्डल का नेतृत्व देना साहित्येतिहास के उस अवकाश को पूरित करने का प्रयत्न है, जिसको पूर्वाग्रहों के कारण कभी भरने का प्रयास नहीं किया गया। मल्लिका ने गद्य रचनाएँ लिखी थीं, लेकिन उनको भारतेन्दु युग के साहित्यकारों की किसी भी श्रेणी में प्रायः स्थान नहीं दिया गया है। यहाँ तक कि हिन्दी साहित्य के आधुनिकीकरण में जिस भारतेन्दु मण्डल की महती भूमिका मानी जाती है, उसमें मल्लिका सहित किसी भी महिला-साहित्यकार को स्थान नहीं दिया गया।

निष्कर्षतः उपरोक्त उल्लेखित पुस्तकों के अतिरिक्त हिन्दी साहित्येतिहास ग्रन्थों की बहुत बड़ी श्रृंखला देखने को मिलती है, जैसे- 'हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास' (गणपतिचन्द्र गुप्त),

'हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास' (रामकुमार वर्मा), 'हिन्दी साहित्य का अतीत' (आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र), 'हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास' (बच्चन सिंह) इत्यादि। किन्तु महिला-लेखन के संदर्भ में सभी लगभग उदासीन दृष्टिगत होते हैं। उन्होंने मीराबाई और महादेवी वर्मा के बीच के अंतराल को खँगालने का प्रयास नहीं किया, जिसके कारण अनेक महिला साहित्यकार हासिए पर चली गईं। मध्यकाल और आधुनिक काल में सैकड़ों की संख्या में लेखिकाएं विद्यमान थीं लेकिन साहित्येतिहास में बहुत विलम्ब के बाद महिला-लेखन को उचित स्थान प्राप्त हुआ। मुख्य धारा के हिन्दी साहित्येतिहास ग्रन्थों में लेखिकाओं की उपस्थिति नगण्य अथवा बहुत कम है। गार्सा द तासी और ग्रियर्सन के इतिहास पर अनेक आक्षेप विदेशी होने के नाम पर लगाए जाते हैं, इसलिए उनके ग्रन्थों में लेखिकाओं की उपस्थिति पर भी एक आक्षेप लगाने से कोई अन्योक्ति न होगी। किन्तु जिन साहित्येतिहासकारों का सीधा संबंध हिन्दी और हिंदुस्तान से रहा, उन्होंने भी मातृ शक्ति के सृजनात्मक कौशल को इतिहास ग्रन्थों में उचित स्थान नहीं दिया।

सन्दर्भ :

1. अनुराधा, हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन पर एक स्त्री के नोट्स, हिन्दी समय डॉट कॉम, 04/06/2021
2. गुप्त, किशोरीलाल, सरोज-सर्वेक्षण, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1967, पृष्ठ 886
3. अनुराधा, हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन पर एक स्त्री के नोट्स, हिन्दी समय डॉट कॉम, 04/06/2021
4. पटेल, किंगसन सिंह, नारीवादी आलोचना, अनन्य प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2021, पृष्ठ 68
5. राजे, सुमन, हिंदी साहित्य का आधा इतिहास, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, संस्करण 2017, पृष्ठ 11
6. राजे, सुमन, हिंदी साहित्य का आधा इतिहास, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, संस्करण 2017, पृष्ठ 08
7. पटेल, किंगसन सिंह, नारीवादी आलोचना, अनन्य प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2021, पृष्ठ 70
8. पटेल, किंगसन सिंह, नारीवादी आलोचना, अनन्य प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2021, पृष्ठ 68
9. माधव, नीरजा, हिन्दी साहित्य का ओझल नारी इतिहास, सामयिक बुक्स, नई दिल्ली, संस्करण 2014, पृष्ठ 48